शोध मंथन, Impact Factor 5.463 (SJIF), UGC No. 40908 ISSN: (P): 0976-5255, (e) : 2454-339X,
Vol. X, No. 1, pp (165-169), Jan-March 2019

सरकारी विद्यालयों में माध्यमिक स्तर पर बालिका शिक्षा के प्रति अभिभावकों के रूझान का अध्ययन

श्री गोविन्द सोनी
असी0 प्रोफे0, शिवा इंस्टीट्यूट ऑफ एजूकेशन,
लालगढ़, श्रीगंगानगर।
ईमेल–drrekhasoni75@yahoo.com

सारांश

प्रस्तुत शोधकार्य का मुख्य उद्देश्य ''सरकारी विद्यालयों में माध्यमिक स्तर पर बालिका शिक्षा के प्रति अभिभावकों के रूझान का अध्ययन'' करना है। शहरी क्षेत्र के 50 पुरूष व 50 महिला तथा ग्रामीण क्षेत्र के 50 पुरूष व 50 महिला का न्यादर्श का चुनाव किया गया है। दत्त संकलन हेतु उपकरण के रूप में स्व–निर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया गया है तथा निष्कर्ष रूप में पाया कि निम्न वर्ग में बालिकाओं को आर्थिक कठिनाइयों का सामना करना पडता है। बालिकाएं अध्ययन की बजाए माता–पिता का अर्थोपार्जन में सहयोग करती है। अतः आर्थिक समस्या बालिका शिक्षा की प्रगति में बाधक है। परिवार में सदस्यों की अधिकता, पारिवारिक रीति रिवाज आदि भी बालिका शिक्षा की प्रगति में बाधक है।

प्रस्तावना

मनुष्य के सर्वांगीण विकास के लिए शिक्षा एक महत्वपूर्ण साधन माना जाता है। मानव का विकास काफी हद तक शिक्षण क्रिया पर निर्भर करता है। विभिन्न विद्वानों का मत है कि शिक्षा एक प्रक्रिया है जो निरंतर चलती रहती है। शिक्षा के माध्यम से मनुष्य समायोजन आसानी से कर सकता है, अनेक गुणों का विकास होता है। महिला वर्ग को शिक्षित करना जरूरी है। आज के समय में 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' के इस प्रकार के कार्यक्रम सरकार द्वारा चलाए जा रहे हैं। जिनसे आज के समाज में बड़ी मात्रा में शिक्षा के प्रति बदलाव है।

आजादी के बाद 1986 राष्ट्रीय शिक्षा नीति के साथ प्रत्येक राज्य में बालिका शिक्षा को अनिवार्य कर दिया था। भारत में महिला शिक्षा विद्यालय, कोलकाता में खोला गया था, जो बालिका शिक्षा की शुरूआत की नींव माना जाता है। उसके बाद बालिका शिक्षा में उत्तरोत्तर वृद्धि हो रही है।

इस प्रकार शिक्षा मनुष्य के सर्वागीण विकास तथा नैतिक व्यवहार को परिभाषित करती है। राष्ट्र की प्रगति शिक्षा पर निर्भर करती है इसलिए प्रत्येक व्यक्ति चाहे वह किसी भी धर्म, जाति, वंश का हो या नर हो या नारी हो शिक्षा सभी के लिये जरूरी है। बालिका शिक्षा हमारे

देश में अन्य देशों की अपेक्षा अत्यंत प्राचीन एवं महत्वपूर्ण है। शिक्षित बालिका ही परिवार व समाज को संस्कारित बनाती है। हमारे देश में कई नारियों जैसे घोषा, अपाला, लोपामुद्रा, उर्वशी, गार्गी, मैत्रेयी आदि ने महत्वपूर्ण योगदान दिया है। आधुनिक भारत में भी इन्दिरा गांधी, विजयलक्ष्मी पण्डित, कृपलानी, कल्पना चावला, सुनिता विलियन, सानिया मिर्जा आदि महिलाओं ने अपना परचम लहराया है जिसमें शिक्षा का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। इस ऐतिहासिक गौरव से भारतवर्ष आजादी के 60 वर्ष पूर्ण होने पर भी शिक्षा की दृष्टि से पिछड़ा हुआ है। आज अनेक शिक्षा योजनाओं, सरकारी योजनाओं व संचार के माध्यम से कुछ ऐसे समुदाय है जिनकी शैक्षिक प्रगति संतोषजनक नहीं है। आज भी पिछड़ी जातियों की महिलाएं शिक्षा के क्षेत्र में पिछड़ी हुई है। विशेषतः बालिका शिक्षा पर ध्यान दिया जाना चाहिए तथा उन समुदायों पर ध्यान देने की जरूरत है जो आज भी बालिका शिक्षा को कम महत्व देते हैं।

कथन का परिभाषिकरण

रूझान

शिक्षा के प्रति अभिभावकों के रूझान का अध्ययन। किसी ओर प्रवृत्त होने की क्रिया या भाव, प्राकृतिक रूप से किसी काम आदि में होने वाली रूचि या दिलचस्पी।

नारी शिक्षा

स्वामी विवेकानन्द जी अपने देश की स्त्रियों की दयनीय दशा के प्रति बड़े सचेत थे। उन्होंने बताया कि नारी का सम्मान करों, उन्हें शिक्षित करों और आगे बढ़ने के अवसर दो। स्वामी जी ने स्पष्ट किया कि जब तक हम नारी को शिक्षित नहीं करते, तब तक समाज को शिक्षित नहीं कर सकते और जब तक समाज को शिक्षित नहीं करते, तब तक समाज अथवा राष्ट्र का विकास नहीं हो सकता।

समस्या का कथन

''सरकारी विद्यालयों में माध्यमिक स्तर पर बालिका शिक्षा के प्रति अभिभावकों के रूझान का अध्ययन''

शोध के उद्देश्य :–

प्रस्तुत शोध के निम्न उद्देश्य इस प्रकार निर्धारित किये गये हैं –

1. सरकारी माध्यमिक विद्यालयों के स्तर पर बालिका
2. सरकारी माध्यमिक स्तर पर बालिका शिक्षा के मार्ग में आने वाली समस्याओं का अध्ययन।
3. बालिका शिक्षा पर अभिभावकों की कम रूचि का अध्ययन।

परिकल्पनाएँ :–

1. बालिका शिक्षा के प्रति शहरी व ग्रामीण महिलाओं की अभिवृत्ति मे सार्थक अन्तर नहीं होता है।
2. बालिका शिक्षा के प्रति शहरी पुरूष व शहरी महिला की अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं होता है।

3. बालिका शिक्षा के प्रति ग्रामीण पुरूष व महिला के अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं होता है।

विधि

प्रस्तुत अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया जाएगा।

न्यादर्श

प्रस्तुत अध्ययन में आँकड़े एकत्रित करने के लिए प्रतिदर्श चुनाव के लिए शहरी क्षेत्र के 50 पुरूष व 50 महिला तथा ग्रामीण क्षेत्र के 50 पुरूष व 50 महिला का न्यादर्श का चुनाव किया है।

उपकरण

प्रस्तुत अध्ययन में स्व–निर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया गया है।

सांख्यिकीय विधियाँ

आँकड़ों के विश्लेषण के लिए मध्यमान, मानक विचलन तथा टी–टेस्ट का प्रयोग किया जाएगा।

परिकल्पनाओं का सारणीयन एवं विश्लेषण

1. बालिका शिक्षा के प्रति शहरी व ग्रामीण महिलाओं के अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं होता है।

क्र.सं	क्षेत्र	संख्या (N)	मध्यमान (M)	मध्यमान अन्तर	प्रमाणिक विचलन (S.D)	टी–मूल्य (t)
1.	शहरी महिला	25	73.16	3.16	5.53	4.9
2.	ग्रामीण महिला	25	70.0		5.29	

व्याख्या

बालिका शिक्षा के प्रति शहरी महिलाओं का मध्यमान 73.16 व मानक विचलन 5.5 तथा ग्रामीण महिलाओं का मध्यमान 70.0 व मानक विचलन 5 प्राप्त हुआ। मध्यमानो में अन्तर की सार्थकता प्राप्त करने हेतु प्राप्त टी का मूल्य 4.9 पाया गया जो कि .05 प्रतिशत स्तर पर तालिका मूल्य 1.97 से अधिक है। अतः उपरोक्त परिकल्पना टी मूल्य के आधार पर अस्वीकृत होती है। इसका तात्पर्य यह है कि शहरी महिला व ग्रामीण महिला की बालिका शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में अन्तर पाया जाता है।

2. बालिका शिक्षा के प्रति शहरी पुरूष व शहरी महिला के अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं होता है।

क्र.सं	क्षेत्र	संख्या (N)	मध्यमान (M)	मध्यमान अन्तर	प्रमाणिक विचलन (S.D)	टी–मूल्य (t)
1.	शहरी पुरूष	25	73.3	1.2	11.12	1.27
2.	शहरी महिला	25	72.1		11.72	

परिवार में सदस्यों की अधिकता, पारिवारिक रीति रिवाज आदि भी बालिका शिक्षा की प्रगति में बाधक है।

शैक्षिक उपादेयता

बालिका शिक्षा के विषय के महत्व एवं उपयोगिता को ध्यान में रखते हुए निम्नांकित शोध व्याख्या

बालिका शिक्षा के प्रति शहरी पुरूष का मध्यमान 73.3 व मानक विचलन 11.12 तथा शहरी महिलाओं का मध्यमान 72.1 व मानक विचलन 11.72 प्राप्त हुआ है। मध्यमानों में अन्तर की सार्थकता प्राप्त करने हेतु प्राप्त टी का मूल्य 1.27 पाया गया जो कि 0.5 स्तर पर तालिका मूल्य 1.97 से कम है। अतः उपरोक्त परिकल्पना टी मूल्य के आधार पर स्वीकृत होती है। इसका तात्पर्य यह है कि शहरी पुरूष व शहरी महिलाओं की बालिका शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में अंतर नहीं पाया जाता हैं।

3. बालिका शिक्षा के प्रति ग्रामीण पुरूष व महिला के अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं होता है।

क्र.सं	क्षेत्र	संख्या (N)	मध्यमान (M)	मध्यमान अन्तर	प्रमाणिक विचलन (S.D)	टी–मूल्य (t)
1.	ग्रामीण पुरूष	25	70.0	6.95	12.01	7.43
2.	ग्रामीण महिला	25	63.05		10.12	

व्याख्या

बलिका शिक्षा के प्रति ग्रामीण पुरूषों का मध्यमान 78.0 व मानक विचलन 12.01 तथा ग्रामीण महिलाओं का मध्यमान 63.05 व मानक विचलन 10.12 प्राप्त हुआ। मध्यमानों में अन्तर की सार्थकता प्राप्त करने हेतु प्राप्त टी का मूल्य 7.49 पाया गया जो कि 0.5 स्तर पर तालिका मूल्य 1.97 से अधिक है। अतः उपरोक्त परिकल्पना टी मूल्य के आधार पर अस्वीकृत होती है। इसका तात्पर्य यह है कि ग्रामीण पुरूष व ग्रामीण महिला की बालिका शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में अन्तर पाया जाता है।

परिणाम

इस शोध अध्ययन में शोधकर्त्ता ने शोध के लिए आदर्श मूलक सर्वेक्षण विधि, प्रश्नावली व साक्षात्कार के अनुसार बालिकाओं की शैक्षिक प्रगति के विश्लेषण में पाया गया है कि बालिका शिक्षा की प्रगति को आर्थिक, सामाजिक, पारिवारिक, व्यक्तिगत, शैक्षिक व कुछ अन्य कारक प्रभावित करते हैं।

निम्न वर्ग में बालिकाओं को आर्थिक कठिनाइयों का सामना करना पडता है। बालिकाएं अध्ययन संबंध विषयों पर आगे और वृहत्तर मात्रा में अध्ययन किया जा सकता है। बालिका शिक्षा से संबंधित भावी शोध के लिए निम्नलिखित सुझाव प्रस्तुत हैं–

1. उच्च माध्यमिक विद्यालय स्तर तक बालिकाओं की शिक्षा के प्रति अभिरूचि एवं अभिवृत्तियों का अध्ययन।

2. शैक्षिक समस्याओं पर शोध कार्य बालिकाओं की शिक्षा में अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति की बालिकाओं की गत 10 वर्षों में हुई प्रगति का अध्ययन।

3. शहरी व ग्रामीण छात्राओं के शिक्षा के नामांकन स्तर पर अध्ययन।

3. उच्च एवं निम्न आर्थिक एवं सामाजिक स्तर की बालिकाओं की शिक्षा का तुलनात्मक अध्ययन।

4. राजस्थान के विभिन्न जिलों में बालिका शिक्षा प्रगति के कारणों का अध्ययन।

5. बालिकाओं के शिक्षा में नामांकन के अवरोध के कारणों का अध्ययन।

6. शिक्षा विकास में महिलाओं की कम सहभागिता के कारणों का अध्ययन।

संदर्भ ग्रन्थ

1 सुखलाल घनश्याम *राजस्थान में शिक्षा सम्प्रति एवं सम्भावनायें*

2 अग्रवाल गोपाल कृष्ण, *समाज शास्त्र 1976,* साहित्य भवन ,आगरा

3 गहलोत जगदीश चंद्र, *राजस्थान का सामाजिक जीवन,* देवेन्द्र गहलोत सन्चालक, हिन्दी साहित्य मंदिर, जोधपुर

4 चटोपाध्याय, कमलादेवी *स्ट्रग्ल फॉर फ्रीड़म वीमेन ऑफ इण्ड़िया,* चीफ एडिटर, तारा अलीबेग

5. पाण्डेय डॉ. विमलचंद्र : *भारत वर्ष का सामाजिक इतिहास*

6. मोसर,सी.ए. : *सर्वे मेथड़्स इन सोशल इनवेस्टीगेटर*

7. षर्मा डॉ. आर.ए. : *''शिक्षा अनुसंधान''* आर.एल.बुक डिपों, मेरठ

8. सुखिया एल.पी., मेहरोत्रा, पी.वी.एवं मेहरोत्रा आर.एन. : *शैक्षिक अनुसंधान के मूल तत्व,* विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा